B.A. II Part Hindi Hons
क्रमांक: पंत
4/2/22
डॉ० अवधेश कुमार
हिंदी
एस०एन०एस० कॉलेज
जहानाबाद

रुककर और फिर झट सरकते देखकर कवि व्यग्र हो उठता है —

" देखता हूँ जब उपवन
प्रियालों में फूलों के
प्रिय भर-भर अपना यौवन पीता है मधुकर
अकेली आकुलता-सी प्राण,
कहीं जब करती मृदु आघात
सिहर उठता कृश गात, ठहर जाते हैं पग अज्ञात।"

विविध अलंकारों की योजना के लिए प्रकृति से उपकरणों को पंत ने चुना है। कहीं मानवीकरण, कहीं उत्प्रेक्षा और कहीं सपनों के सहारे पंत ने प्रकृति के ऐसे चित्र खींचे हैं, जिसे देखकर मन-मयूर नाच उठता है। उदाहरण के लिए पंत के 'नौका-विहार' शीर्षक कविता को आसानी के साथ देखा जा सकता है।

प्रकृति-चित्रण पृष्ठभूमि या वातावरण को उपस्थित में सहायक होता है। जहाँ गंभीर वातावरण की आवश्यकता होती है, वहाँ कवि प्रकृति को गंभीर रूप में चित्रित करता है। जहाँ उसे उल्लास पूर्ण वातावरण पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करना होता है, वहाँ वह प्रकृति को उल्लास एवं आनन्द के रूप में प्रस्तुत करता है। 'एकतारा' का प्रारम्भिक प्रकृति चित्रण कविता के प्रतिपाद्य विषय की गंभीरता को कला के आवरण में प्रस्तुत करके पाठक के हृदय को सहज गति दे देता है, जो दार्शनिक तथ्यों को आत्मसात सुगमता से कर लेता है। 'ग्राम-चित्र' शीर्षक कविता में कवि जीवन की करुण दशा का चित्रण कर वर्णन को अधिक सशक्त बना देता है। संध्या के बाद कविता में अत्यन्त गंभीर वातावरण की सृष्टि हुई है —

" सिमटा पंख साँझ की लाली
जा बैठी अब तरु शिखरों पर,
ताम्र पर्ण पीपल से सम्मुख
झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर
सूर्य क्षितिज पर होता ओझल।"

मधुर मिलन के आनन्द के क्षणों का वातावरण प्रस्तुत करने के लिए पंत जी ने प्रकृति का मादक वातावरण प्रस्तुत किया है। 'ग्रन्थि' शीर्षक